

سُورَةُ التَّغَابُنِ

Surah 64 — At-Taghaabun (Mutual Disillusion) • Medinan • 18 Ayahs • Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ يُسَبِّحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۚ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

जो चीज़ आसमानों में है और जो चीज़ ज़मीन में है (सब) खुदा ही की तस्बीह करती है उसी की बादशाहत है और तारीफ़ उसी के लिए सज़ावार है और वही हर चीज़ पर कादिर है

2

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ ۚ وَمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ

वही तो है जिसने तुम लोगों को पैदा किया कोई तुममें काफ़िर है और कोई मोमिन और जो कुछ तुम करते हो खुदा उसको देख रहा है

3

خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُورَكُمْ ۚ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ

उसी ने सारे आसमान व ज़मीन को हिकमत व मसलेहत से पैदा किया और उसी ने तुम्हारी सूरतें बनायीं तो सबसे अच्छी सूरतें बनायीं और उसी की तरफ लौटकर जाना है

4

يَعْلَمُ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ ۚ بِذَاتِ الصُّدُورِ

जो कुछ सारे आसमान व ज़मीन में है वह (सब) जानता है और जो कुछ तुम छुपा कर या खुल्लम खुल्ला करते हो उससे (भी) वाकिफ़ है और खुदा तो दिल के भेद तक से आगाह है

5

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبُؤُا ۚ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ مِنْ قَبْلُ فَذَاقُوا ۚ وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ

क्या तुम्हें उनकी खबर नहीं पहुँची जिन्होंने (तुम से) पहले कुफ़्र किया तो उन्होंने अपने काम की सज़ा का (दुनिया में) मज़ा चखा और (आखिरत में तो) उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है

6

ذَلِكَ بِأَنَّهُ ۚ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَقَالُوا ۙ أَبَشَرٌ ۑ يَهْدُونَنَا فَكَفَرُوا ۖ وَتَوَلَّوْا ۖ ۚ وَاسْتَغْنَى اللَّهُ ۚ وَاللَّهُ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ۚ

ये इस वजह से कि उनके पास पैग़म्बर वाज़ेए व रौशन मौज़िज़े लेकर आ चुके थे तो कहने लगे कि क्या आदमी हमारे हादी बनेंगे गरज़ ये लोग काफ़िर हो बैठे और मुँह फेर बैठे और खुदा ने भी (उनकी) परवाह न की और खुदा तो बे परवा सज़ावारे हम्द है

7

زَعَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ أَن لَّنْ يُبْعَثُوا ۖ ۚ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبُّنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ۖ ۚ وَذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۚ

काफ़िरों का ख्याल ये है कि ये लोग दोबारा न उठाए जाएँगे (ऐ रसूल) तुम कह दो वहाँ अपने परवरदिगार की क़सम तुम ज़रूर उठाए जाओगे फिर जो जो काम तुम करते रहे वह तुम्हें बता देगा और ये तो खुदा पर आसान है

8

فَأْمِنُوا ۖ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۖ وَالنُّورِ الَّذِي أَنْزَلْنَا ۖ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۚ

तो तुम खुदा और उसके रसूल पर उसी नूर पर ईमान लाओ जिसको हमने नाज़िल किया है और जो कुछ तुम करते हो खुदा उससे ख़बरदार है

9

يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ۖ ۚ ذَٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۖ ۚ وَمَنْ يُؤْمِنِ ۖ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا ۖ ۚ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ ۖ ۚ وَيُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ ۖ تَجْرَىٰ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ ۚ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ

जब वह क़यामत के दिन तुम सबको जमा करेगा फिर यही हार जीत का दिन होगा और जो शरूख़ खुदा पर ईमान लाए और अच्छा काम करे वह उससे उसकी बुराइयाँ दूर कर देगा और उसको (बेहिश्त में) उन बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें जारी हैं वह उनमें अबादुल आबाद हमेशा रहेगा, यही तो बड़ी कामयाबी है

10

وَالَّذِينَ كَفَرُوا ۖ وَكَذَّبُوا ۖ بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ

और जो लोग काफ़िर हैं और हमारी आयतों को झुठलाते रहे यही लोग जहन्नुमी हैं कि हमेशा उसी में रहेंगे और वह क्या बुरा ठिकाना है

11

مَا أَصَابَ مِنْ مُّصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ يَهْدِ اللَّهُ قَلْبَهُ ۚ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ

जब कोई मुसीबत आती है तो खुदा के इज़न से और जो शरूख़ खुदा पर ईमान लाता है तो खुदा उसके कल्ब की हिदायत करता है और खुदा हर चीज़ से खूब आगाह है

12

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَإِنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلْغُ الْمُبِينُ

और खुदा की इताअत करो और रसूल की इताअत करो फिर अगर तुमने मुँह फेरा तो हमारे रसूल पर सिर्फ पैग़ाम का वाज़ेए करके पहुँचा देना फर्ज़ है

13

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ وَعَلَىٰ اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ

खुदा (वह है कि) उसके सिवा कोई माबूद नहीं और मोमिनो को खुदा ही पर भरोसा करना चाहिए

14

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ إِنَّ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ وَأَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا ۚ لَكُمْ فَاحْذَرُوهُمْ ۚ وَإِنْ تَعَفَّوْا ۚ وَتَصَفَّحُوا ۚ وَتَغْفِرُوا ۚ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ ۚ رَحِيمٌ

ऐ ईमानदारों तुम्हारी बीवियों और तुम्हारी औलाद में से बाज़ तुम्हारे दुश्मन हैं तो तुम उनसे बचे रहो और अगर तुम माफ़ कर दो दरगुज़र करो और बरूख़ दो तो खुदा बड़ा बरूख़ने वाला मेहरबान है

15

إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۚ وَاللَّهُ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ

तुम्हारे माल और तुम्हारी औलादे बस आज़माइश है और खुदा के यहाँ तो बड़ा अज़्र (मौजूद) है

16

فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَأَسْمِعُوا ۖ وَأَطِيعُوا ۖ وَأَنْفِقُوا ۖ خَيْرٌ لَّأَنْفُسِكُمْ ۖ
وَمَنْ يُوقِ شُحَّ نَفْسِهِ ۖ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ

तो जहाँ तक तुम से हो सके खुदा से डरते रहो और (उसके एहकाम) सुनो और मानों और अपनी बेहतरी के वास्ते (उसकी राह में) खर्च करो और जो शख्स अपने नफ्स की हिरस से बचा लिया गया तो ऐसे ही लोग मुरादें पाने वाले हैं

17

إِنْ تُقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا ۖ يَضْعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۖ وَاللَّهُ شَكُورٌ حَلِيمٌ

अगर तुम खुदा को कर्जे हसना दोगे तो वह उसको तुम्हारे वास्ते दूना कर देगा और तुमको बख्श देगा और खुदा तो बड़ा कद्रदान व बुर्दवार है

18

عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

पोशीदा और ज़ाहिर का जानने वाला ग़ालिब हिकमत वाला है